वार्षिक प्रतिवेदन
2013-14

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्,
(पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्त परिषद्)
देहरादून (उत्तराखण्ड)

संरक्षक :
डॉ. अश्विनी कुमार, भा.व.से.
महानिदेशक
भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्
देहरादून

सम्पादक मण्डल :
शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार), भा.वा.अ.शि.प.
नीना खांडेकर, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार), भा.वा.अ.शि.प.
रमाकान्त मिश्र, अनुसन्धान अधिकारी, (मीडिया एवं विस्तार), भा.वा.अ.शि.प.

प्रकाशित :
मीडिया एवं विस्तार प्रभाग
विस्तार निदेशालय
भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्
पो. ऑ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248 006 (उत्तराखण्ड), भारत

मुद्रक :
अपना जनमत, देहरादून

पृष्ठ आवरण :

1. पादप उपचार के लिए लाइसीमीटर परीक्षण – शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर
2. सुपारी भूतजोलोकिया – कृषिवानिकी माडल के तहत प्रदर्शन ग्राम में भूतजोलोकिया पौधशाला तथा किसानों के खेतों में उसका विस्तार–वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट।
3. *एम. इंडिका* के कलम से तैयार पौधे–उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर।
4. ब्रूड लाख के गठ्ठर तैयार करना–उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर।

डॉ. अश्विनी कुमार, भा.व.से.
महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प.
तथा कुलाधिपति, वन अनुसन्धान संस्थान–सम–विश्वविद्यालय
Dr. Ashwani Kumar, IFS
Director General, ICFRE
and Chancellor, FRI University

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार
भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्
(आई एस ओ 9001:2000 प्रमाणित संस्था)
पो. ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248 006
Ministry of Environment, Forests and Climate Change,
Government of India
Indian Council of Forestry Research and Education
(An ISO 9001 : 2000 Certified Organization)
P.O. New Forest, Dehra Dun - 248006

प्राक्कथन

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् (भा.वा.अ.शि.प.), देहरादून देश में एक प्रमुख संस्था है जो प्राकृतिक संसाधनों का पोषणीय विकास हासिल करने के लिए वानिकी शोध, शिक्षा और विस्तार कार्यकलाप और समन्वयन कर रही है। परिषद् के लिए 2013–14 का साल विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहा है क्योंकि इसके द्वारा कई महत्वपूर्ण आयोजन किए गए, जैसे वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में वानिकी अनुसंधान संस्थाओं की एशिया पेसिफिक एसोसिएशन (ए.पी.ए.एफ.आर.आई.), मलेशिया और कोरिया वन अनुसंधान संस्थान, कोरिया के सहयोग से 'वन जलविज्ञान पर एशिया प्रशांत कार्यशाला'; काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर में 'चंदनकाष्ठ : चालू रूझान एवं भावी सम्भावनाएं' पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार और आई यू एफ आर ओ कार्य दल S2.08.02 के तत्वावधान में वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर द्वारा मामाल्लापुरम, चेन्नई में पांचवी अंतर्राष्ट्रीय कैज्वारिना कार्यशाला, *नाइट्रोजन–स्थिरीकरण* वृक्षों का सुधार और संवर्धन।

विस्तार कार्यकलापों के महत्व को मान्यता देते हुए परिषद् 'डायरेक्ट टू कन्ज्यूमर', 'वन विज्ञान केंद्र', 'प्रदर्शन ग्राम', 'भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के कृषि विज्ञान केंद्रों के साथ वन विज्ञान केंद्रों की नेटवर्किंग' जैसी अनेकों योजनाओं का क्रियान्वयन कर रही है ताकि अनुसंधान परिणामों को अंतिम उपभोक्ताओं तक ले जाया जा सके। इसी तरह के एक कार्यक्रम के अंतर्गत वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा नए लाख परपोषी फ्लेमिन्जिया प्रजाति का सूत्रपात किसानों के लिए उनकी आजीविका बढ़ाने में काफी आशाजनक सिद्ध हुआ है। इसी तरह भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् बांस प्रशिक्षण सहायता समूहों के जरिए विभिन्न अंतिम उपभोक्ताओं को प्रशिक्षण दे रही है जिससे उनकी आय बढ़ाई जा सके।

परिषद् ने पर्यावरण प्रबंधन के क्षेत्र में भी अपनी विशेषज्ञता का विस्तार किया है जिसके अंतर्गत कर्नाटक के खनन जिलों यथा– बेल्लारी, तुमकुर और चित्रदुर्ग में एकल खानों के लिए सुधार और पुनर्वास योजनाएं तैयार की जा रही हैं। इस संबंध में मुझे यह सूचित करते हुए खुशी हो रही है कि अब तक 93 सुधार एवं पुनर्वास योजनाएं तैयार करके माननीय उच्चतम न्यायालय की केंद्रीय अधिकार – प्राप्त समिति के समक्ष प्रस्तुत किया गया जिसमें से 90 को स्वीकृति प्रदान की गई।

इसके अलावा, परिषद् वन्य प्राणिजात एवं वनस्पति की संकटापन्न प्रजातियों में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर सभा (CITES) के तहत कार्यशालाओं, प्रशिक्षणों का नियमित रूप से आयोजन करती है। एक दूसरे प्रमुख विकास के तहत उन व्यवस्थाओं को समाविष्ट करके राष्ट्रीय कार्य योजना कोड 2014 तैयार किया गया है, जो राष्ट्रीय एवं विश्व स्तर पर उभर रहे विषयों का समाधान करता है।

स्लेम परियोजना के लिए तकनीकी सरलीकरण संगठन के रूप में कार्य करते हुए भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् ने स्लेम पर एक सूचनात्मक डॉक्यूमेंट्री बनाने के अलावा सर्वोत्तम पद्धतियों और अन्य मुख्य विषयों पर कई महत्वपूर्ण प्रकाशन निकाले हैं। इसके अलावा हैदराबाद, कोलकता और नई दिल्ली में रेगिस्तानीकरण, भूमि निम्नीकरण और सूखे के लिए निर्देशकों को अंतिम रूप देने के लिए दो क्षेत्रीय और एक राष्ट्रीय परामर्शी कार्यशालाओं का भी आयोजन किया गया।

परिषद् अपने सभी संस्थानों में आधुनिक अवसंरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध कराने का प्रयास कर रही है। सृजित नई अनुसंधान सुविधाओं में शामिल हैं, वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रवर्धन संस्थान, कोयम्बटूर द्वारा वालयार, केरल में सागौन वानस्पतिक संवर्धन उद्यान एवं नेवेली, तमिलनाडु में अनुसंधान केंद्र, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में 'ओपन टॉप चैम्बर फैसिलिटी' और वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा झारखण्ड के लिए एक निर्वचन केंद्र की स्थापना।

पदार्थ हस्तांतरण समझौते और लाइसेंस समझौते के साथ परिषद् संस्थानों से मिलने वाली बौद्धिक सम्पदा के सृजन एवं प्रबंध को नियंत्रित करने वाली एक व्यापक बौद्धिक सम्पदा प्रबंध नीति का विकास एक अन्य महत्वपूर्ण कदम है।

मुझे वर्ष 2013–14 के परीक्षित वार्षिक लेखा के साथ परिषद् के कार्यकलापों पर अंतर्दृष्टि उपलब्ध कराने वाले इस वार्षिक प्रतिवेदन को प्रस्तुत करते हुए अपार प्रसन्नता हो रही है।

(डॉ. अश्विनी कुमार)

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद् की संगठनात्मक संरचना

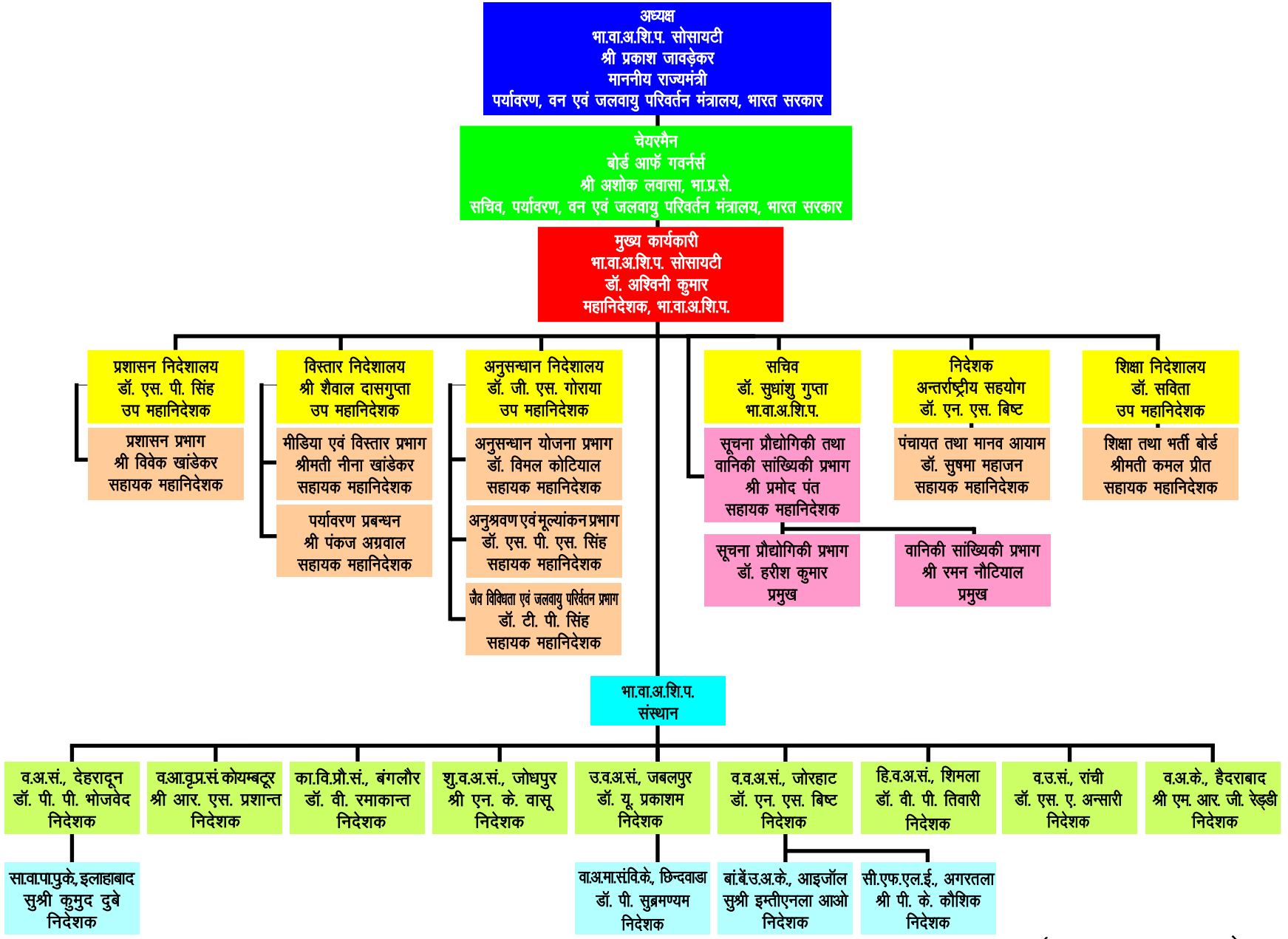

(10 नवम्बर 2014 तक के अनुसार)